विचार बिन्दु

हर चीज़ की कीमत व्यक्ति की जेब और ज़रूरत के अनुसार होती है और शायद उसी के अनुसार वह अच्छी या बुरी होती है।

–संतोष गोयल

क्या यही विकास है?

गत कुछ वर्षों से प्रधानमंत्री जी एवं सत्ताधारी दल के विभिन्न नेताओं द्वारा विभिन्न मंचों पर यह घोषित किया जा रहा है कि भारत ने गत कुछ वर्षों में तीव्र गति से प्रगति की है एवं इसका लाभ देश के सभी वर्गों को मिला है। प्रधानमंत्री जी द्वारा, जिन्होंने पूर्व में 'सबका साथ - सबका विकास' का नारा दिया था, इसमें कालांतर में 'सबका विश्वास और सब का प्रयास' भी जोड़ दिया गया। उनकी बात मानें तो भारत का डंका पूरे विश्व में बजने लगा है। कोरोना का प्रबंधन भी विश्व में सर्वश्रेष्ठ रूप से भारत में किया गया। खूब रोजगार भी उपलब्ध कराए गए। महिलाओं को बैंकों से जोड़कर एवं उन्हें उज्जवला योजना के अंतर्गत कनेक्शन दिलवा कर उत्पीड़न से मुक्ति दिलाई गई है। सरकार द्वारा जारी नई योजनाओं का जिक्र भी प्रधानमंत्री एवं उनके दल के अन्य नेता अपने सभी उद्बोधन में करना नहीं भूलते। उनके द्वारा यह भी कहा जाता है कि इनमें से कई कार्य स्वतन्त्रता के बाद 'पहली' बार किए गए हैं।

यह सुनकर एक भारतीय के नाते प्रत्येक नागरिक का सिर गर्व से ऊंचा होना चाहिए।

एक विवेकशील नागरिक का यह भी कर्तव्य है कि वह इन सब दावों को धरातल पर वास्तविकताओं की कसौटी पर कसे। इस सन्दर्भ में दावोस में आयोजित विश्व अर्थिक मंच ( ) की बैठक के पहले दिन ऑक्सफेम द्वारा जारी असमानता सर्वेक्षण रिपोर्ट और उससे संबंधित इंडिया के मुख्य कार्यकारी अमिताभ बेहर की टिप्पणियों का उल्लेख उपयुक्त होगा। इस रिपोर्ट के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं:–

1. कोरोना काल में कुछ लोगों की संपत्ति में जहां अत्यधिक वृद्धि हुई, वहीं गरीब लोगों की संपत्ति पहले से कम हुई है। अरबपतियों की संपत्ति में इसी अवधि में 35 प्रतिशत की वृद्धि हुई वहीं 84 प्रतिशत जनसंख्या की सम्पत्ति में कमी हुई।

2. भारत के 11 प्रतिशत अरबपतियों की संपत्ति में जितनी वृद्धि हुई है, उससे पूरे देश की नरेगा योजना को 10 वर्षों तक चलाया जा सकता है अथवा स्वास्थ्य मंत्रालय का सारा खर्चा 10 वर्ष तक उठाया जा सकता है।

3. भारत के 100 अरबपतियों की संपत्ति पर 4 प्रतिशत संपत्ति कर लगाया जाए तो उस से जो राशि प्राप्त होगी उस से पूरे देश का मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम 17 वर्षों तक चलाया जा सकता है।

4. 98 सर्वाधिक संपन्न व्यक्तियों की संपत्ति पर 1 प्रतिशत भी कर लगाया जाए तो उससे देश के आयुष्मान भारत योजना को 7 वर्ष तक चलाया जा सकता है।

5. 10 करोड़ से अधिक वार्षिक आय वाले व्यक्तियों पर 2 प्रतिशत कर लगाया जाए तो उससे प्राप्त होने वाली राशि के माध्यम से महिला एवं बाल विकास विभाग के बजट को दोगुने से अधिक किया जा सकता है।

6. सबसे अधिक नुकसान असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को हुआ, लगभग 12 करोड़ व्यक्तियों ने अपना रोजगार, लॉक डाउन के कारण खोया।

7. लॉकडाउन के कारण पैदल ही अपने-अपने गांवों की ओर निकल पड़ने के कारण लगभग 300 असंगठित क्षेत्र के मजदूरों की मृत्यु, भुखमरी, आत्महत्या, थकान, सड़क एवं रेल दुर्घटनाओं, पुलिस बर्बरता एवं समय पर चिकित्सा सहायता न मिलने के कारण हुई।

8. भारतीय राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग में अप्रैल 2020 में कुल 2582 मानवाधिकार उल्लंघन की शिकायतें दर्ज की गईं।

9. शिक्षा पर कोरोना के कारण बहुत बुरा प्रभाव हुआ। ग्रामीण परिवारों में केवल 4 परसेंट के पास कंप्यूटर था एवं केवल 15 प्रतिशत के पास इंटरनेट कनेक्शन था।

10. ऑनलाइन शिक्षा का सबसे सर्वाधिक नुकसान बालिकाओं के, शिक्षा से बाहर होने के रूप में सामने आया है।

11. उल्लेखनीय है कि भारत की लगभग 60 प्रतिशत आबादी एक कमरे या उससे कम में रहती है इसके कारण व्यक्तिगत स्वास्थ्य के लिए आवश्यक क्रियाएं जैसे हाथ धोने, दूरी बनाए रखना संभव नहीं हो पाया।

12. गर्भवती औरतों को कोरोना काल में बिना चिकित्सा- देखभाल के छोड़ दिया गया। निजी अस्पतालों ने इसका भरपूर लाभ उठाया।

13. सरकारी बजट का स्वास्थ्य पर सबसे कम व्यय करने वाले देशों में, भारत विश्व में चौथे नंबर पर है।

14. वर्ष 2021 में भारतीय अरबपतियों की संख्या 102 से बढ़कर 142 हो गई जबकि 84 प्रतिशत परिवारों की आय में वर्ष 2021 में कमी आई। इस प्रकार कोरोना के कारण जहां समान्य नागरिक की आय में बहुत कमी आई, वहीं कुछ अमीर परिवारों की आय में तेजी से वृद्धि हुई।

देश का विकास तब सार्थक है जब देश के सभी लोगों का विकास हो और असमानता कम हो। कोरोना के कष्टकारी समय में, जो लोग आर्थिक दृष्टि से कमजोर हैं और असंगठित क्षेत्र में हैं, उनको यदि हम कहें कि देश तेजी से आगे बढ़ रहा है तो यह घाव पर नमक छिड़कने जैसा ही होगा।

ऑक्सफैम इंडिया के मुख्य कार्यकारी अमिताभ बेहार के अनुसार अब समय आ गया है जब अत्यधिक अमीर व्यक्तियों पर अधिक कर लगाया जाना चाहिए ताकि उस राशि को गरीबों के जीवन स्तर को सुधारने में खर्च किया जा सके।

भारत में असमानता कितनी अधिक है, इसी से सिद्ध होता है कि भारत के शीर्ष 10 प्रतिशत अमीर व्यक्तियों के पास देश की संपत्ति का 57 प्रतिशत है एवं 55 प्रतिशत आबादी के पास केवल 13 प्रतिशत संपत्ति है ।

भारत में असमानता बढ़ने के प्रमुख कारण 2016 में संपत्ति कर की समाप्ति, कॉर्पोरेट टैक्स में कटौती, और अप्रत्यक्ष कर में वृद्धि हैं। इनके कारण अमीर अधिक अमीर तथा गरीब और गरीब होते गए। वर्ष 2021 में गौतम अडानी की संपत्ति में सबसे अधिक वृद्धि हुई और यह वृद्धि विश्व में पांचवीं सबसे बड़ी वृद्धि है। इनकी संपत्ति में इस वर्ष तीन लाख करोड़ की वृद्धि हुई जिसके कारण उनकी कुल संपत्ति बढ़कर लगभग 7 लाख करोड हो गई। इसी प्रकार मुकेश अंबानी की संपत्ति भी एक लाख करोड़ बढ़कर लगभग 7.50 लाख करोड़ हो गई है।

भारत की असमानता को समझने के लिए हम एक और तरीका अपनाने का प्रयास करते हैं। यदि भारत के 10 सर्वाधिक अमीर व्यक्ति प्रतिदिन साढ़े सात करोड़ रुपिया भी खर्च करें तो उन्हें अपनी संपत्ति व्यय करने में कुल 84 साल लगेंगे।

विश्व की कुल कुपोषित जनसंख्या में से एक चौथाई भारत में है। 2020 में गरीबी में इतनी वृद्धि हुई कि वह कई अफ्रीकन देशों से भी अधिक है। भारत में आत्महत्या करने वालों में सर्वाधिक संख्या दिहाड़ी मजदूरों, स्वरोजगार करने वाले एवं बेरोजगार व्यक्तियों की थी। ऑक्सफेम की रिपोर्ट इस बात की ओर संकेत करती है कि भारत सरकार की नीतियां इस प्रकार की नहीं है जिससे निर्धन व्यक्तियों की आय में वृद्धि हो अथवा कोई आर्थिक सुरक्षा कोरोना जैसे कष्ट के समय प्राप्त हो सके। इसके विपरीत नीतियां कुछ इस प्रकार की बनाई जाती हैं जो कुछ विशिष्ट अमीर परिवारों और उच्च आय वर्ग के लोगों को अधिक सहायता करती हैं। यह उसी प्रकार की बात है जैसे कोई बहुत स्वस्थ व्यक्ति रेस में दौड़े जो पहले ही बहुत आगे खड़ा है और पीछे कमजोर व्यक्ति, जो पहले ही बहुत पीछे है। ऐसी स्थिति में किस प्रकार से इन दोनों में दूरी कम होगी? स्वाभाविक है ऐसा करने से जो व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से पीछे है, वह समय के साथ-साथ, सरकार की नीतियों के कारण और पीछे होता चला जाता है। जो व्यक्ति सक्षम है वह अपनी संपत्ति में तेजी से वृद्धि कर लेता है।

देश का विकास तब सार्थक है जब देश के सभी लोगों का विकास हो और असमानता कम हो। कोरोना के कष्टकारी समय में, जो लोग आर्थिक दृष्टि से कमजोर हैं और असंगठित क्षेत्र में हैं, उनको यदि हम कहें कि देश तेजी से आगे बढ़ रहा है तो यह घाव पर नमक छिड़कने जैसा ही होगा। दुर्भाग्य की बात तो यह है कि आगामी चुनावों के समय भी घोर असमानता, चर्चा का विषय नहीं बन पाया है।

विकास की परिभाषा विभिन्न लोग अपनी-अपनी प्रकार से बताते रहे हैं। चमचमाती सड़कों का बनना, विशाल बांध का बनना, बिजली का अधिक उत्पादन होना, आधुनिकतम कारों का बनना, गाड़ियों का बनना बुलेट ट्रेन का बनना विकास नहीं कहा जा सकता। विकास तो तब कहलाएगा जब इन सारी सुविधाओं का उपयोग करने के लिए व्यक्ति के पास क्रय क्षमता होगी और यह क्रय क्षमता तभी होगी जब वह इतना पैसा कमा सके कि वह विभिन्न सुविधाओं का उपभोग कर सके। अन्यथा, ये सारे विकास के प्रतीक उसे दूर से चिढ़ाते हुए ही दिखाई देंगे। आज जब एक व्यक्ति साइकिल भी नहीं खरीद सकता या बस का किराया नहीं दे सकता हो, उसके सामने यदि नवीनतम मॉडल की चमकदार गाड़ियां तेजी से निकल जायें, तो उसके लिए ऐसा विकास किस काम का? किसी व्यक्ति के पास एक साधारण कमरा भी रहने के लिए ना हो और उसके सामने बहुमंजिला खड़ी हो तो, उसके लिए देश का विकास बेमानी हो जाता है। यदि एक विद्यालय में वातानुकूलित कमरे में विद्यार्थी पढ़ते हों और दूसरी और उसे पढ़ने के लिए पर्याप्त स्थान भी उपलब्ध न हो तो उसके लिए विकास का कोई मायने नहीं रह जाएगा। विकास का दावा करना, विकास के बारे में लोगों को बार-बार जताना तथा लोगों के द्वारा विकास की अनुभूति करना, यह दो अलग-अलग बातें हैं।

ऑक्सफैम के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अमिताभ बेहर का सुझाव है कि सरकार को स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक सुरक्षा पर अपना बजट बहुत बढ़ाना चाहिए एवं इन क्षेत्रों में निजीकरण के व्यावसायिक मॉडल को तिलांजलि देनी चाहिए, क्योंकि इन के माध्यम से असमानता को कम नहीं किया जा सकता, अपितु बढ़ाया ही जा सकता है। समय आ गया है जब सरकार अत्यधिक अमीर लोगों पर उपयुक्त कर लगाए और उससे प्राप्त धन को वह वंचित वर्ग की आय अर्जन की क्षमता बढ़ाने तथा उसे सामाजिक सुरक्षा बढ़ाने में लगाए।

जब तक देश में घोर असमानता बनी रहेगी, साधारण नागरिक यह सवाल करता ही रहेगा कि क्या यही विकास है?

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

राष्ट्रीय पर्व - जनसहभागिता बढ़ाने की आवश्यकता

स्वराज प्राप्ति के 75 वें वर्ष में भारत सरकारी स्तर पर यह वर्ष आजादी के अमृत महोत्सव के रूप में मना रहा है। इस गौरवशाली अवसर को सरकारी के साथ-साथ असरकारी रूप से मनाने की आवश्यकता है। सरकारी आयोजनों पर काफी कुछ बजट भी खर्च होगा, पर क्या कभी आपने सोचा है कि राष्ट्रीय महत्व के दोनों पर्व स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस के लिए हमारा व्यक्तिगत बजट कितना है ? जन सहभागिता कितनी है।

होली, दीपावली, रक्षाबंधन, जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ इत्यादि त्यौहारों-अवसरों के साथ हमारा पारिवारिक, सांस्कृतिक और धार्मिक जुड़ाव है, होना भी चाहिए, कोई आपत्ति नही। ये पारिवारिक, सांस्कृतिक, धार्मिक सम्बन्ध और अधिक प्रगाढ़ होने चाहिए। यह विभिन्न परम्परागत पर्व और त्योहार में समाज को जड़ो से जोड़े रखते हैं, नई पीढ़ी तक परम्परा को पहुंचाते हैं। इनके साथ ही राष्ट्रीय पर्वों के आयोजन में भी जन सहभागिता बढ़ाने की अत्यंत आवश्यकता दिखाई देती है। लोगों को नागरिक जिम्मेदारी का दायित्व बोध करवाने में और राष्ट्रीय चरित्र का विकास करने में इन उत्सवों अत्यंत महत्व है। हम दीपावली आदि त्योहार जितने उत्साह और खर्च से मनाते है। उस का दस प्रतिशत खर्च भी राष्ट्रीय पर्व पर खर्च करने लग जाएं तो देश में राष्ट्रप्रेम का भाव और संस्कार बहुत गहरे तक जा सकता है।

जिनके बच्चे स्कूल जाते हैं उन परिवारों में तो फिर भी कुछ हलचल रहती है, लेकिन शेष सब परिवारों को तो जैसे 15 अगस्त 26 जनवरी के राष्ट्रीय पर्व से कोई सम्बन्ध ही नही है, एक छुट्टी का अवसर मान लेते है। आजादी के बाद बनी सभी शिक्षानीतियों में, शिक्षा में जीवन मूल्यों, राष्ट्र प्रेम के संस्कारों की बात की गई। शिक्षा के केंद्रों में इन पर्वों के माध्यम से लगातार प्रयास भी किया जाता है लेकिन जैसे बालक अपना विद्यार्थी जीवन पूरा करके एक व्यक्ति के रूप में सामाजिक जीवन में प्रवेश करता है, तो धीरे-धीरे उसका उसके जीवन में इन महत्वपूर्ण राष्ट्रीय पर्वों का स्थान कुछ कुछ कम होने लगता है। यह अत्यंत चिंताजनक है।

काश...आजादी के तुरंत बाद से ही इन्हें आमजन का उत्सव बनाने के कुछ प्रयास किये जाते। इन्हें केवल सरकारी समारोह नहीं रखा जाता है, बल्कि यह अवसर जन महोत्सव के अवसर होने चाहिए। तिरंगा फहराने की आमजन को मिली छूट के बाद अब धीरे-धीरे यह राष्ट्रीय पर्व जनता के उत्सव में बदलते जा रहे हैं। इन उत्सवों के लोक उत्सव में बदलने की गति और अधिक बढ नी चाहिए। राष्ट्रीय महत्व के इन आयोजनों में देशभक्ति केवल बच्चों तक ही क्यों रहे, बड़ों में भी तो आनी चाहिए। इसलिए समाज में व्यापक स्तर पर राष्ट्रीय पर्वों का आयोजन हो, इसकी आवश्यकता है। कहते हैं राष्ट्र प्रेम का भाव रहेगा तो भ्रष्टाचार भी रुकेगा, कालाबाजारी भी रुकेगी, जातिवाद भी रुकेगा बेईमानी भी रुकेगी, मिलावट खोरी भी रुकेगी। राष्ट्रीय चरित्र का विकास अनेक समस्याओं का समाधान करेगा।

पिछले 5-6 वर्षों से मैंने इस दिशा में अपने कुछ पुराने विद्यार्थियों के साथ एक प्रयोग शुरू किया है। मेरे बहुत सारे पुराने विद्यार्थी देश के विभिन्न भागों में व्यवसायरत है। उनका एक व्हाट्सएप ग्रुप बना रखा है और सभी से आग्रह किया जाता है कि अपनी अपनी दुकान पर 15 अगस्त और 26 जनवरी को राष्ट्र ध्वज वंदन अवश्य करें। आस-पास के दुकानदारों को जोड़ते हुए करें।

हम सब घर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराए , घर पर भारत माता का चित्र लाकर सपरिवार भारत माता पूजन कर सकते हैं। अपने घर बूंदी के लड्डू जरूर लाएं। अपने दुकान/ फर्म/ कार्यालय पर भी राष्ट्र ध्वज वंदन- भारत माता पूजन के कार्यक्रम करें । आस-पास के दुकानदारों परिचितों को भी इस आयोजन में जुड़ने का आग्रह करें। सभी लोग राष्ट्र ध्वज को सलामी दें, प्रणाम करें, पुष्प अर्पित करें।

संदीप जोशी, शिक्षाविद्
सदस्य एनसीटीई (केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय)

चमत्कार होते नहीं, किये जाते हैं

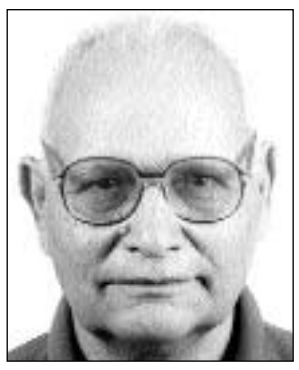

डॉ. श्रीगोपाल काबरा

क्या कोई बच्चा जिसकी स्वांस गति और हृदय की धड़कन डेढ घन्टे तक बंद रही हो, वह फिर जीवित हो सकता है? दिल की धड़कन बंद तो, रक्त संचार खत्म। बिना रक्त संचार के 3 मिनट में मस्तिष्क नष्ट और पांच मिनट में तो सब कुछ । डेढ़ घन्टा तो बहुत लम्बा समय होता है, उतने समय में तो वह 18 बार मर जायगा। फिर वह कैसे जीवित हुआ ? चमत्कार? हां चमत्कार, लेकिन चमत्कार हुआ नहीं, डाक्टरों ने किया।

घटना आस्ट्रिया के एक शीत प्रदेश की है। तीन साल की मासूम बच्ची ठन्डे फिश पॉण्ड में डूब गई। मां बाप को मालूम होने और कुंड में से निकाल ने में 30 मिनट लग गये। बच्ची ठन्डी टीप, बेहोश, श्वास रुकी हुई, हृदय गति बंद। एमरजेंन्सी को फोन किया। जवाब मिला हम तुरंत हेलिकाप्टर से पहुंच रहे हैं, तब तक जैसा आपको बता रहे हैं वैसे बच्ची के मुंह में श्वास फूंकिये और उसका सीना आगे से दबाइये। आठ मिनट में एमरजेंन्सी टीम पहुंच गई और बच्ची को सी पी आर करते हुए हेलीकोप्टर से ले उड़ी। अस्पताल की एमर्जेन्सी को फोन किया कि 30 मिनट तक ठन्डे पानी में डूबी हुई बच्ची को ला रहे हैं।

उचित आपतकालीन इलाज की तैयारी करें। अस्पताल पहुंचने में उन्हे 25 मिनट लगे। सब तैयार थे। बच्ची को सीधा हृदय के आपरेशन थियेटर में ले जाया गया। बच्ची का अंदर का ताप तब मात्र 18.7 डिग्री से. था। एक टीम ने कृत्रिम स्वास और सीने को दबाने की प्रक्रिया (सी पी आर) चालू रखी। दूसरी टीम ने दाईं जांघ की बड़ी धमनी में एक नली डाली और पास की शिरा में दूसरी नली, और दानो को हार्ट-लंग-बाई-पास मशीन से जोड़ दिया। शिरा से खून कृत्रिम फेफड़े. (लंग) में गया जहां उसके आक्सीकरण के साथ उसे धीरे-धीरे गर्म भी किया गया और एक पम्प के द्वारा धमनी में लौटा दिया गया। यह आरम्भ करने में 20 मिनट लग गये।

रक्त परीक्षण पर उसमें एसीडोसिस मिली जिसे बायोकार्बोनेट देकर आहिस्ता आहिस्ता 40 मिनट में ठीक किया गया। शरीर का तापमान 37 डिग्री लाने में 6 घन्टे लगे। जब बच्ची का ताप मान 24 डिग्री पर पहुंचा तभी दिल पुन: धड़कना चालू हो गया लेकिन दुर्भाग्य से फेफड़ों में तरल भरा था अत: कृत्रिम श्वांस यंत्र के बावजूद आक्सीकरण नहीं हो पा रहा था। दुविधा की स्थिति थी। दिल धड़कने से रक्त संचार तो चालू हो गया लेकिन रक्त फेफड़ों में आक्सीकृत नहीं हो रहा था। आवश्यक था कि हृदय को चालू रखते हुए रक्त को बाहर कृत्रिम फेफड़े में आक्सीकृत कर वापस हृदय में भेजा जाए। इस प्रक्रिया को एक्स्ट्राकोर्पोरियल मेम्ब्रेन आक्सीजेनेशन (ई सी एम ओ) कहते हैं।

उनके पास बच्चों के काम आने वाली मशीन नहीं थी। अत: उन्होने बच्ची का सीना खोला और अभ्यस्त विधि से एक नली हृदय की बड़ी धमनी एओर्टा में और दूसरी नली दाये एट्रियम में डाली, और मशीन से जोड़ दिया। एट्रियम से रक्त एक निश्चित मात्रा में मशीन में भेज गया और वहां से आक्सीकृत होकर एओर्टा में पम्प कर दिया गया - पूरे शरीर में संचारित होने के लिए और दायें एट्रियम में वापस आने के लिए। जांघ की बाईपास नलिया और मशीन हटा दी गई लेकिन चूंकि अभी भी फेफड़ों से आक्सीकरण पूरा नहीं हो रहा था अत: ई सी एम ओ चालू रखना आवश्यक था।

बच्ची के खुले सीने को कपड़े से ढक कर, कृत्रिम श्वास यंत्र और ई सी एम ओ के साथ बच्ची को आई सी यू में शिफ्ट किया गया। धीरे धीरे ई सी एम ओ के काम को कम करने और फेफड़ों के काम पूरा शुरू होने में 15 घन्टे लगे। तब इ सी एम ओ हटाया गया और सीना बंद किया गया। उसके बाद भी कृत्रिम श्वास यंत्र और सघन चिकित्सा चालू रखने के लिए बच्ची को बेहाश रखा गया । पूरे 12 दिन लगे, जब बच्ची होश में आई और कृत्रिम श्वास यंत्र को हटाया जा सका।

मस्तिष्क जिसके क्षतिग्रस्त होने का सबसे अधिक अंदेशा था वह भी पूर्ण रूपेण काम कर रहा था। छ: महिने बाद दायें पाव और बायें हाथ में मामूली सी कमजोरी के अलावा बच्ची सर्वथा स्वस्थ थी।

यह था चमत्कार जो हुआ नहीं, किया गया था। चमत्कार जो समर्पित चिकित्सा कर्मियों के अथक प्रयत्न की परिणति था। चिकित्सा कर्मियों की कितनी टीमों ने कितने संयम और समन्वय से यह किया होगा सहज समझना मुश्किल है।

लेकिन इतने समय तक निष्क्रिय या कहें मृत रहने के बाद मस्तिष्क, हृदय और फेफड़े फिर कैसे चालू हो गये ? प्राणवायु के अभाव में सचमुच मृत क्यों नही हो गए ? किस आधार पर इन मूल-भूत (वाईटल) मार्मिक अंगों की काशिकाऐं जिन्दा रहीं? यह चमत्कार हुआ कैसे? चिकित्साकर्मियों ने यह कैसे संभव किया?

ठन्डे पानी में डूबने से शरीर का तापमान तेजी से गिरा। गिरते तापमान के साथ कोशिकाओं की रसायनिक क्रिया (प्राण प्रक्रिया) कम होती गई और साथ ही आक्सीजन की आवश्यकता भी। एक तापमान पर पहुंचने पर कोशिकाओं की रसायन प्रक्रिया सर्वथा बंद हो गई। इससे पहले कि आक्सीजन की कमी के कारण सक्रिय हुए कोशिका में स्थित आत्मघाती रसायन कोशिका को नष्ट करते, वे रसायन स्वयं ही ठन्ड से निष्क्रिय हो गए और कोशिकाऐं मृत होने से बच गई, सुषुप्त हो गई, समाधि में चली गई। चिकित्सकों ने आक्सीजन की उपलब्धि के साथ आहिस्ता -आहिस्ता शरीर का तापमान बढा कर, कोशिकाओं की रसायन प्रक्रियाओं को पुन: जाग्रत उन्हें जीवित किया गया।

पहले जब हार्ट लंग मशीन उपलब्ध नहीं थी तब ऐसी ही हाइपोथर्मिया (अल्प तापावस्था) विधि से हृदय का ओपन हार्ट ऑपरेशन किया जाता था । मरीज को बेहोश करने के बाद उसे ठन्डे पानी में रख कर शरीर का तापमान इतना कम किया जाता था कि मस्तिष्क सुसुप्त हो जाय और दिल की धडकन बंद। तब फटाफट सीना खोल कर हृहय का ऑपरेशन किया जाता था।

डॉ. श्रीगोपाल काबरा
वरिष्ठ चिकित्सक, जयपुर

भूतपूर्व सैनिक तिरंगा लेकर 26 घंटे दौड़ लगाएगा

कोटा, (निसं)। कोटा के भूतपूर्व सैनिक शक्ति सिंह हाड़ा गणतंत्र दिवस पर एक अनूठा रिकोर्ड अपने नाम करने का प्रयास करेंगे। वह गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या से 26 घण्टे लगातार दौड़ कर 200 किमी की दौड़ पूरी करेंगे।

■ **देश के बहादुर सैनिकों को समर्पित होगी फ्लैग रन**

हाडा ने बताया कि श्री उम्मेद क्लब कोटा के तत्वावधान में 25 जनवरी को दोपहर 2 बजे दौड़ का प्रांरभ श्री उम्मेद क्लब कोटा से किया जाएगा और 26 जनवरी, गणतंत्र दिवस पर 26 घण्टे की दौड़ पूरी करते हुए सांय 4 बजे श्री उम्मेद क्लब कोटा में दौड़ पूरी की जाएगी। दौड़ को हरी झण्डी समाजसेवी अमित धारीवाल दिखाएंगे।

हाड़ा ने बताया कि 25 जनवरी को प्रारंभ होने वाली दौड़ में वह तिंरगा लेकर दौड़ेगे और जबतक उनकी दौड़ पूरी नहीं हो जाती वह इस दौड़ में तिरंगे को अपने साथ रखेंगे। उन्होंने कहा यह खुली दौड़ होगी शहर के जो व्यक्ति उनकी दौड़ की राह में जितनी दूरी तक उनके साथ दौड़ना चाहते है उनका स्वागत है और वह भी इस अनूठी दौड़ का हिस्सा बन सकते है। इस दौड में उनकी क्रू टीम आईआरसी, बीआरसी, वाईएफसी उनके साथ रहेगी। शक्ति सिंह हाड़ा ने बताया कि इस दौड़ के लिए इण्डिया बुक ऑफ रिकॉर्ड के लिए नामांकन किया गया है। 26 घण्टे निरंतर दौड़ का रिकॉर्ड बनाने के लिए उन्होने सभी औपचारिकताएं पूरी कर दी है। इण्डिया बुक ऑफ रिकॉर्ड की टीम पूरी दौड़ में उपस्थित रहेगी और दौड़ पूरी होने पर प्रमाण पत्र भेंट करेगी। इण्डिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में 18.50 घण्टे निरंतर दौड का रिकॉर्ड दर्ज है।

गौरी माहेश्वरी ने 13 वर्ष की उम्र में 1500 लोगों को सिखाई कलिग्राफी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गौरी माहेश्वरी को वर्चुअली सम्मानित किया।

अजमेर, (कासं)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अजमेर की गौरी माहेश्वरी को कला के क्षेत्र में पीएम राष्ट्रीय बाल पुरस्कार-2022 से वर्चुअली सम्मानित किया। कलैक्टर अंशदीप ने बताया कि शास्त्री नगर अजमेर निवासी 8वीं कक्षा की छात्रा गौरी माहेश्वरी ने कला के क्षेत्र में विशेष योग्यता प्राप्त की है। वे 13 वर्ष की उम्र में कलिग्राफी का शिक्षण करवाती हैं। इन्होंने पूरी दुनिया में 1500 से अधिक व्यक्तियों को कलिग्राफी सिखाई है। पीएम से मिले अवॉर्ड में इन्हें एक लाख रूपए नगद पुरस्कार, प्रशस्ति पत्र एवं पदक प्रदान किए गए। उन्होंने बताया कि गत दो वर्षों के पुरस्कार एक साथ प्रदान किए गए। यह पुरस्कार भारत सरकार के महिला एवं बाल विभाग द्वारा 2018 से आरम्भ किया गया था। इसमें 6 श्रेणियों में बच्चों को पुरस्कार दिए जाते है। नवाचार, वीरता, समाजसेवा, कला एवं संस्कृति, खेल तथा क्षेत्रीय उपलब्धि के लिए यह पुरस्कार दिया जाता है। पुरस्कार के लिए आवश्यक डिजटली ब्लॉग चयन तकनीक का विकास आईआईटी कानपुर के द्वारा किया गया था। पुरस्कार वितरण समारोह में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने चुनिन्दा बच्चों से वार्तालाप भी किया। पूरे देश के 623 बच्चों को ये पुरस्कार स्पर्धा के पश्चात मिले। गुरू गोविन्द सिंह के साहिबजादों ने वीरता, धैर्य, साहस, समर्पण एवं बलिदान का अतुलनीय उदाहरण प्रस्तुत किया। इसके लिए 26 दिसंबर को वीर बाल दिवस मनाया जाएगा।

■ **अवॉर्ड में एक लाख रूपये नकद, पुरस्कार व प्रशस्ती पत्र दिया जायेगा**

पावटा। उपखंड पावटा में स्थित श्रीपीतांबरा पीजी महिला महाविद्यालय में राष्ट्रीय बालिका दिवस के मौके पर रवीना यादव को एक दिन का प्रिंसिपल बनाया गया, वहीं पिंकी को उप प्रिंसिपल बनाया गया। राष्ट्रीय बालिका दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान पावटा प्रधान प्रतिनिधि जगन चौधरी ने बताया कि राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाए जाने का उद्देश्य समाज में बालिकाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरुक करना है। साथ ही उनके साथ होने वाले भेदभाव के प्रति भी लोगों को जागरुक करना है। आज हमारी बेटियां अपनी प्रतिभा एवं काबिलियत से हर क्षेत्र में अग्रणी होकर देश का नाम रोशन कर रही हैं। वे आज पूरे विश्व में विभिन्न क्षेत्रों में नये कीर्तिमान स्थापित कर राष्ट्र को गौरवान्वित कर रही हैं।

राशिफल मंगलवार 25 जनवरी, 2022

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2078, चित्रा नक्षत्र दिन 10:54 तक, धृति योग प्रात: 9:12 तक, बव करण प्रात: 7:49 तक, चन्द्रमा तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-तुला, मंगल-धनु, बुध-मकर, गुरू-कुम्भ, शुक्र-धनु, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-वृश्चिक राशि में।

द्विपुष्कर योग और राजयोग सूर्योदय से प्रात: 7:49 तक है। रवियोग दिन 10:54 तक रहेगा। आज स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (तिथि से), और श्री रामान्दाचार्य जयन्ती है। आज अष्टमी तिथि का क्षय हुआ है। आज कालाष्टमी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:59 से 11:19 तक, लाभ-अमृत 11:19 से 1:59 तक, शुभ 3:19 से 4:34 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 7:19, सूर्यास्त 5:59

मेष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिलेगा।

धनु
आर्थिक/वित्तीय मामलों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

वृष
स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति में सुधार होगा।

कन्या
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

मकर
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना सफल रहेगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है।

तुला
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

कुंभ
धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक कार्यों में आस्था बढ़ेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। महत्वपूर्ण व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

कर्क
परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है।

वृश्चिक
धार्मिक-मांगलिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। व्यक्तिगत कारणों से मन में असंतोष बना रहेगा।